राहु–केतु के स्थानादिवश फल

सुशील अग्रवाल

1. विषय प्रवेश

सामान्यतः राहु–केतु को तामसिकता का पर्यायवाची माना जाता है। ज्योतिषीय शास्त्रों में इन्हें 'प्रबलौ तमोग्रहौ' की संज्ञा भी दी गयी है जिसका अर्थ है 'दोनों प्रबल अंधकारमय ग्रह'। इसके अतिरिक्त, काल–सर्प जैसे अशुभ योग भी शेष ग्रहों के राहु–केतु के मध्य होने से ही निर्मित होते हैं। अधिकांशतः राहु–केतु की भावस्थिति देखते ही भावफलों के नष्ट होने की घोषणा कर दी जाती है जो शास्त्रसंगत नहीं है।

अनुभवी ज्योतिषियों को विदित है कि दशाफल आकलन के लिए ऋषि पराशर ने निम्न तीन मुख्य घटकों का उल्लेख किया है :

- ग्रहों के स्वभाववश साधारण फल होते हैं जो ग्रहों के नैसर्गिक स्वभाव और कारकत्वों से प्रभावित होते हैं।
- ग्रहों के भाव स्वामी होने से उनके स्थानादिवश विशिष्ट फल होते हैं जो भाव–स्वामित्व के आधार पर प्राप्त होते हैं।
- फलों में शुभाशुभता की मात्रा का निर्धारण ग्रहों के बलानुसार किया जाता है। बली ग्रह शुभता में वृद्धि और अशुभता में कमी करते हैं जबकि निर्बल ग्रह अशुभता में वृद्धि और शुभता में कमी करते हैं। षड्बल के अंतर्गत राहु–केतु की बल गणना नहीं की जाती इसीलिए जन्मकुंडली और वर्गों से ही बल का आकलन किया जाता है जिसके लिए बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के दशाफलाध्याय में राहु–केतु की निम्न उच्चादि राशियाँ भी दी गई है :

उच्च	मूलत्रिकोण	स्वराशि	नीच	
राहु	वृषभ	मिथुन	कुम्भ	वृश्चिक
केतु	वृश्चिक	धनु	वृश्चिक	वृषभ

राहु–केतु को भौतिक ग्रह न होने के कारण किसी भाव का स्वामित्व प्राप्त नहीं है इसीलिए अधिकांशतः फलित नैसर्गिकता के आधार पर कर दिया जाता है जो उचित नहीं है। इस लेख का यही विषय है कि राहु–केतु भी स्थानादिवश, अर्थात् भाव सम्बन्धित फल भी देते हैं जो शुभाशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

2. साहित्यिक सन्दर्भ एवं उदाहरण

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्
योगकारकाध्याय श्लोक 16 और लघु पाराशरी श्लोक 13 के अनुसार :

यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेशसंयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।।

इस श्लोक के अनुसार, राहु–केतु निम्न नियमानुसार स्थानादिवश फल देते हैं :

- जिस भाव में स्थित हों उसके गुणानुसार, और
- जिस भावेश से युत हों, उसके गुणानुसार।

यदि राहु–केतु युति रहित हैं तो त्रिकोण भावस्थिति शुभ फलप्रद होगी, त्रिषडाय या अष्टम भावस्थिति अशुभ फलप्रद होगी, केन्द्र भावस्थिति तटस्थ फलप्रद होगी और द्वितीय या द्वादश भावस्थिति सम फलप्रद होगी। यदि राहु–केतु किसी भावेश से युत हैं तो भावेश के शुभाशुभ गुण भी ग्रहण करेंगे।

उदाहरण : 12–02–1965, 07:30 बजे, आगरा, उत्तर प्रदेश।

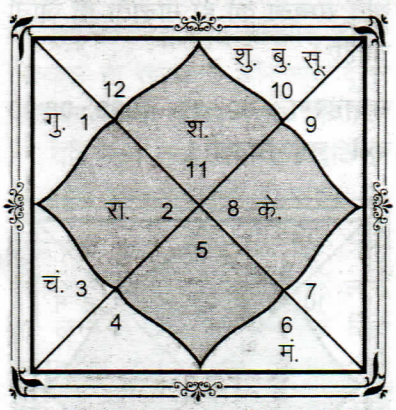

इस कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित हैं जो केन्द्र में होने के कारणवश तटस्थ भावस्थिति है। राहु की किसी ग्रह से युति भी नहीं है। अतः राहु भावस्थिति के गुणानुसार तटस्थ रहेंगे। उच्च राशिस्थ होने के कारण राहु की नैसर्गिक अशुभता में भी न्यूनता आएगी। जातक को माता, वाहन या

घर के सुख संबंधित कोई कमी नहीं है, केवल इतना है कि जातक पढाई के लिए विदेश गए और स्वदेश लौटने के बाद माता–पिता से कुछ ही दूरी पर रहते हैं।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्
योगकारकाध्याय श्लोक 17, लघु पाराशरी श्लोक 21 और फलदीपिका अन्तर्दशाफल श्लोक 52 में दिए निम्न श्लोक में राहु–केतु की योगकारक फलदायक स्थिति वर्णित है :

यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।

नाथेनाऽन्यतरेणापि
सम्बन्धद्यागकारकौ।।।।

यदि राहु–केतु केन्द्र भाव में स्थित होकर त्रिकोण भावेशों से या त्रिकोण भाव में स्थित होकर केन्द्र भावेशों से सम्बन्ध बनाएं तो योगकारक होते हैं। राहु–केतु की दृष्टि को पाराशरीय मान्यता न होने के कारण केवल युति सम्बन्ध को ही मान्यता दी जानी चाहिए।

उदाहरण : 02–12–1998, 08:00 बजे, नई दिल्ली।

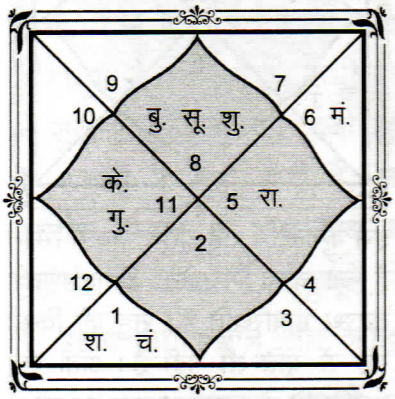

इस कुंडली में केतु केन्द्रस्थ हैं। गुरु त्रिकोणेश (पंचमेश) हैं। केतु और गुरु की युति है। अतः केतु केन्द्रस्थ होकर त्रिकोणेश से सम्बन्ध बना रहे हैं जिससे उपर्युक्त दशा में योगकारक फल होंगे।

उपरोक्त श्लोक का उद्देश्य यह है कि राहु–केतु भी शुभ फलदायक होते हैं। यदि राहु–केतु की स्थिति उपरोक्त से भिन्न होगी तो ये भावस्थिति और भावेश युति अनुसार शुभाशुभ फलप्रद होंगे।

फलदीपिका अन्तर्दशाफल श्लोक 53 और लघु पाराशरी श्लोक 36 में दिए निम्न श्लोक में राहु–केतु सम्बन्धित अन्तर्दशा फल दिया है :

तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित्।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ।। 36 ।।

श्लोकानुसार यदि राहु–केतु शुभ (त्रिकोण) स्थित हों तो (महादशा से) असम्बन्धित होने पर भी अपनी अन्तर्दशा में योग फलप्रद होते हैं।

निम्न चित्र से समझते हैं :

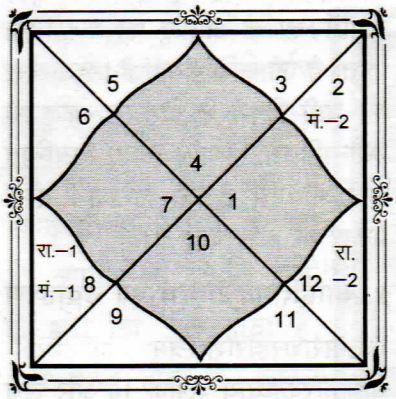

मंगल पंचमेश एवं दशमेश होकर योगकारक हैं। मान लीजिए कि योगकारक मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा है।

स्थिति–1 : राहु (रा–1) की स्थिति त्रिकोण (पंचम) में है। मंगल (मं–1) और राहु की पंचम में भाव युति होने के कारण महादशा स्वामी और अन्तर्दशा स्वामी परस्पर सम्बन्धित हैं। अतः मंगल/राहु में योगफल मिलेंगे।

स्थिति–2 : राहु (रा–2) की स्थिति त्रिकोण (नवम) में है। मंगल (मं–2) की स्थिति एकादश भाव में होने के कारण महादशा स्वामी और अन्तर्दशा स्वामी परस्पर असम्बन्धित हैं। इस श्लोक के अनुसार, राहु की अन्तर्दशा असम्बन्धित होने पर भी मंगल/राहु में योगफल ही मिलेंगे।

3. निष्कर्ष

राहु–केतु सम्बन्धित दशा–अन्तर्दशा के फलित के लिए नैसर्गिकता और बल के अतिरिक्त राहु–केतु के स्थानादिवश फलों का आकलन अवश्य करना चाहिए।

पता : सोम अपार्टमेंट्स
बी–301, सेक्टर–6, प्लॉट–24,
द्वारका, नई दिल्ली–110075
दूरभाष : 9810162371

कंप्यूटर जन्माक्षर
विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर लियो स्टार द्वारा निर्मित
• नवजात शिशुओं के लिये भाग्यशाली नाम एवं नक्षत्रफल • विवाह के लिए कुंडली मिलान
• लाल किताब के सरल उपाय
• ज्योतिषीय सरल उपाय
• अंकशास्त्र • एस्ट्रोग्राफ एवं प्रश्नफल
नोट : यहां फ्यूचर पॉइंट की ज्योतिषीय सामग्री भी मिलती है।
संपर्क : कुसुम गर्ग –
B-16,
Shreeji Bunglows, Sun Pharma Road, Vadodara-390020,
Gujarat,
Phone : 09327744699